17 दिसम्बर 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 6.50 से 7.20 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 18 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 11 अक्टूबर को 'सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अरिहंत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं रमन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण संदीप जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के विनीत जैन एवं देवेन्द्र जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 23 नवम्बर को 'हमारा अपना जैन भूगोल : भाग-1' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ.दीपकजी जैन वैद्य ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमन जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं ऋषभ जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण रविन्द्र जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के गौरव उखलकर एवं विनय जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 25 नवम्बर को 'छहढाला तथा मोक्षमार्ग प्रकाशक का तुलनात्मक विवेचन' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में मंथन गाला (शास्त्री प्रथम वर्ष), सिद्धार्थ सिंघई (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं ऋषभ-राजीव जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण हरीश जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के शुभम जैन वात्सल्य एवं अरविन्द जैन ललितपुर ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(4) दिनांक 5 दिसम्बर को 'एक दृष्टि पुराण की ओर : भाग 1' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजयजी सेठी ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अभय जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष), अभिषेक उपाध्ये (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं अनुभव गौरझामर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण चिराग जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सतेन्द्र जैन एवं ऋषभ-राजीव जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी शास्त्री ने किया।

(5) दिनांक 6 दिसम्बर को 'एक दृष्टि पुराण की ओर : भाग 2' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सर्वेश जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष), शुभम जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष), ऋषभ जैन सम्यक् (शास्त्री तृतीय वर्ष)एवं अभिषेक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण प्रजल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अविनाश जैन एवं गौरव भिण्ड ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के अच्युतकांत जैन व सौरभ जैन फूप ने किया।

हार्दिक आमंत्रण : अवश्य पधारें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुनः ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **चतुर्थ वार्षिक महोत्सव दिनांक 26 फरवरी से 28 फरवरी 2016 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

संजू की दादा-दादी एवं पिता से बातचीत

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एक दिन जब कहीं से मुझे रुपये नहीं मिले ते मैंने पापा की जेब से हजार रुपये उठा लिये। पापा कहते हैं –''मैं चोर हूँ, भला अपने पापा के पैसे लेना भी चोरी है। वह तो मेरे ही हैं न ? चाहे आज लूँ या कल ?''

संजू की माँ संजू की बातें सुनकर किंकर्तव्यविमूढ-सी होकर हतप्रभ रह गई, क्योंकि पहली बार संजू को इतना बोलते सुना था। अत: उसने पूछा-''बेटा ! यह सब बोलना तुझे किसने सिखाया?''

संजू ने कहा – ''राजू अपने पापा से खूब बोलता है। माँ ! उसके पिता उसे जेब खर्च को मनमाना रुपया देते हैं, वे राजू से कभी कुछ नहीं कहते।''

यदि गेंद को जरूरत से ज्यादा दबाया जाये तो या तो हाथ से छूटकर एवं उचटकर दूर चली जाती है या फिर फूट जाती है। यही स्थिति संजू की हुई थी। अब वह माता-पिता से उचटकर दूर, बहुत दूर जा गिरा था।

छोटा परिवार सुखी परिवार का नारा देने वाले डॉ. धर्मचन्द और उनकी पत्नी डॉ. कनकलता जब दैवयोग से बड़े परिवार के चक्रव्यूह में फंस गये तो उनकी दशा भी दयनीय हो गई थी।

पुत्र की चाह में न चाहते हुये भी उनके एक के बाद एक तीन लड़कियाँ हो गईं। राजू उनकी चौथी संतान था। तीनों बहनें राजू से बड़ी थीं। माता-पिता मिलाकर पूरे परिवार में आठ सदस्य हो गये थे।

यद्यपि आर्थिक दृष्टि से उनके पास कोई कमी नहीं थी, पिता रिटायर्ड जज थे, अत: उन्हें भी भरपूर पेंशन मिलती थी। लाखों रुपये अनिवार्य जमा योजना, जीवन बीमा आदि के उन्हें मिल चुके थे। डॉ. दम्पत्ति शासकीय सेवा में सर्वोच्च पदों पर तो थे ही, अच्छी प्रतिष्ठा होने से उनके घर पर भी मरीजों की भारी भीड़ रहा करती थी।

पर, संतान के जीवन को सुखमय बनाने के लिये पैसा ही सब कुछ नहीं होता, संतान पर व्यक्तिगत ध्यान देना भी अति आवश्यक होता है। थोड़ा-सा भी ध्यान हटा नहीं कि संतान पतन के किसी भी गहरे गड्ढे में गिर सकती है।

डॉ. धर्मचंद और उनकी पत्नी डॉ. कनकलता का स्वयं का कहना था कि ''संतान पैदा करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उनका सही ढंग से लालन-पालन, देखभाल और पढाने-लिखाने के साथ उनके सम्पूर्ण भविष्य को उज्ज्वल बनाना होता है और आज के इस महंगाई के युग में तथा अत्यन्त व्यस्त जीवन में कोई कितना भी साधन सम्पन्न क्यों न हो, दो संतानों से अधिक का दायित्व वहन नहीं कर सकता।

पुत्रों के प्रति माता-पिता का जितना दायित्व है, उससे भी कहीं अधिक दायित्व पुत्रियों के प्रति होता है; क्योंकि यदि योग्य घर की कमी के कारण उनका जीवन सुखी नहीं रह सका तो उनके माता-पिता न केवल उत्तरदायी ही होते हैं, बल्कि पुत्रियों को दु:खी देखकर स्वयं भी दु:खी होते हैं। और यह पीड़ा जीवनभर सहनी पड़ती है। यदि दैवयोग से रूप-रंग या गुणों में हीन हुई, तब तो लाखों रुपये खर्च करने पर भी योग्य घर-वर मिलना दुर्लभ हो जाता है।

अत: सन्तानोत्पत्ति के समय यह विवेक जरूरी है कि जितना उत्तरदायित्व निभा सके, उतनी ही संतान हो।

यह सब जानते हुये भी पुत्र-लालसा ने डॉ. धर्मचन्द और उनकी पत्नी डॉ. कनकलता को अंधा बना दिया था। दूसरों को मार्गदर्शन देने वाले स्वयं ही मार्ग से भटक गये थे। परिणाम यह हुआ कि उनके कुल का दीपक एकमात्र पुत्र राजू पारिवारिक तूफानी थपेड़ों में 'दिया और तूफान' की कहानी बनकर रह गया।

दादी माँ ने आवाज लगाई –''बेटा राजू ! तू तैयार हो गया है न ? मुझे मन्दिर जाने को देर हो रही है, प्रवचन आरम्भ हो गया होगा ? चल बेटा चल, मुझे जल्दी छोड़ आ।''

''दादी माँ ! मुझे तो आज स्कूल से ढेर सारा होमवर्क (गृहकार्य) मिला है, मैं वह कब करूँगा ?''– राजू ने कहा।

''बस छोड़कर आ जा, वहाँ से तो मैं किसी तरह उठते-बैठते किसी के साथ भी आ आऊँगी। पर यहाँ से एक तो अकेली जाऊँ कैसे ? और किसी तरह धीरे-धीरे चली भी गई तो जब तक पहुँचूँगी, तब तक प्रवचन ही पूरा हो जायेगा। बेटा ! तुझे वहाँ रोकूँगी नहीं, चल जल्दी चल, देर मत कर।''

किताबें-कॉपियाँ समेटकर बस्ते में रखता हुआ राजू बड़बड़ाया –''प्रतिदिन यही समय तुम्हारे मन्दिर जाने का होता है और यही समय मुझे होमवर्क करने को मिलता है। तुम ही बताओ दादी माँ ! ऐसा कैसे चलेगा ? कब तक चलेगा ?''

''अरे बेटा ! तू ही बता न ? तेरे सिवाय मेरे बुढापे का सहारा और है ही कौन ? मुझे रास्ते में कुछ दिखाई तो देता नहीं है। सड़क पार करने में यदि किसी की टक्कर लग गई तो मेरी तो हड्डी-पसली ही टूट जायेगी न ?''– बड़े ही दीनभाव से दादी माँ ने कहा।

''दादी माँ ! यदि मन्दिर न जाओ तो नहीं चलेगा ?''

''बेटा ! इसमें जाये बिना चलने न चलने की बात ही क्या है ? भगवान थोड़े ही कहते हैं कि तुम हमारे दर्शन करने आओ। दर्शन-पूजन करने और प्रवचन सुनने से अपना ही लाभ है, इसलिये जाते हैं।''

''क्या लाभ होता है इससे ?''- राजू ने पूछा।

''बेटा अभी ही सब कुछ पूछ लेगा, अभी तो तू मुझे वहाँ पहुँचा दे, वहाँ जाने की जल्दी है न ? फिर जब भी तुझे समय मिले - मेरे पास आ जाना, मैं तुझे सब समझा दूँगी। हाँ, जब तूने पूछ ही लिया है तो इतना तो तू भी समझ ही ले कि जो प्रतिदिन भगवान के दर्शन-पूजन करता है, वह एक न एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। बाकी विस्तार से फिर कभी बताऊँगी। जब जल्दी चल ! बातें रास्ते में कर लेना।''

रास्ते में चलते-चलते दादी माँ ने कहा -''बेटा, मैंने तो जिन्दगी में कभी भी बिना मन्दिर का खाया-पीया नहीं है और बिना प्रवचन सुने भी कभी रही नहीं - इसलिये मैं सोचती हूँ कि अब थोड़ी-सी जिन्दगी और है, बुढापे में धरम-करम न छूटे तो अच्छा है। एकमात्र यही तो जीवन की सच्ची कमाई है, इसके सिवाय और तो साथ जाता ही क्या है ? बेटा ! यह तो मेरा सौभाग्य है जो तुझ जैसा पोता मिल गया, अन्यथा मुझे इस बुढापे में यह सहारा और कौन देता ?

हाँ, और सुन ! मैं तुझे प्रतिदिन दो रुपये दूँगी, पर तू यह किसी से कहना नहीं कि मैं तुझे रुपये देती हूँ। जो भी जी में आये खा-पी लिया करना, समझे....।''

दादी माँ ने मन में सोचा -''मुझे कौन-सा यह सब सिर पर बाँधकर ले जाना है। बच्चा है, खायेगा-पीयेगा और इस लालच में मेरा काम कर दिया करेगा।''

''अच्छा दादी माँ ! तुम कितनी अच्छी हो। जब तुम तैयार हो जाया करो तो मुझे आवाज दे दिया करना, मैं कम से कम तुम्हारा काम तो करूँगा ही, तुम्हें दिखता नहीं है न ?

राजू स्कूल से लौटा ही था कि दादाजी ने आवाज लगाई - ''बेटा राजू ! तुम आ गये ? जरा सुनो तो बेटा ! मैं तुम्हें यह पर्चा दे रहा हूँ, सो तुम दौड़कर बाजार से दवा तो ले आओ।''

''अरे दादाजी ! स्कूल से आया नहीं कि फिर....?''

''अरे बेटा ! ऐसी बातें नहीं करते। देख बेटा ! यदि मेरा काम तू ही नहीं करेगा तो और कौन करेगा ? मैं तो तेरी कबसे प्रतीक्षा कर रहा हूँ ? कितना अच्छा है मेरा बेटा ! देख बेटा ! तेरी बहिनें तो अकेली बाजार जाने से रहीं, फिर उन्हें पढाई के कारण समय ही कहाँ मिलता है ? ले ये पच्चीस रुपये, इनमें से दो-ढाई रुपये बचेंगे सो तुझे जो कुछ पसंद हो खा-पी लेना। ठीक है न ?''

''अच्छा दादाजी ! आज तो ले आता हूँ, पर...।''

''पर क्या बेटा ! अब तो जब तक जीना है तब तक यही सब चलना है और यदि तू ही आना-कानी करेगा तो बोल और मैं किससे कहने जाऊँगा ? हाँ, तुझे जब खर्चे को जितने पैसे चाहिये हों, मुझसे ले जाया कर; परध्यान रखना काम को कभी मना मत करना, समझे !''

राजू ने सोचा -''चलो ठीक है, दादा और दादी - दोनों से मन चाहे रुपया मिलेंगे सो खूब मजा आयेगा। इनका काम ही कितना-सा है और फिर इनका काम करने से पापा भी तो खुश रहेंगे सो इनके सिवाय उनसे अलग पैसे से लिया करूँगा। गुड ! वेरी गुड !! इतने पैसे मेरे दोस्तों में किसी को भी नहीं मिलते होंगे, जितने मुझे मिलेंगे।''

एक दिन राजू के पापा ने पूछा -''क्यों बेटा ! तुम दादाजी और दादी माँ का काम तो बराबर करते हो न ?''

राजू ने एक क्षण सोचकर जवाब दिया -'' पापा ! करता तो हूँ, पर उनके कामों में मेरा बहुत समय खराब हो जाता है, पापा आप ऐसा करो न ? किसी लड़के को इस काम के लिये नौकरी पर रख लो तो कैसा रहे ?''

''अरे बेटा ! अच्छे लड़के मिलते ही कहाँ हैं ?''

''अच्छा पापा ! यदि अच्छा लड़का मिल जाये तो आप उसे क्या वेतन दे सकते हो ?''

यदि अच्छा लड़का हुआ तो यही पाँच-सात रुपया रोज दे देंगे।

''हँसते हुये राजू बोला -''अच्छा पापा ! बताओ मैं कैसा लड़का हूँ - अच्छा या बुरा ?''

पापा ने हँसी का जवाब हँसी में देते हुये कहा -''अच्छा अब समझा मैं ! तू तो मुझसे भी ज्यादा होशियार हो गया है। अच्छा चलो ठीक है, तुम्हें पाँच रुपये रोज मिलेगा, पर दादाजी की कभी शिकायत नहीं आनी चाहिये।

और हाँ, राजू सुनो ! कल तुम्हारे मास्टरजी मिले थे, वे कह रहे थे कि आजकल राजू स्कूल समय पर नहीं पहुँच रहा है, क्या बात है ?''

''बात क्या है पापा...।''

राजू कुछ कहना ही चाहता था कि ''चलो कोई बात नहीं, आगे ध्यान रखना''- यह कहकर उसके पापा अस्पताल चले गये।

(क्रमशः)

आवश्यक सूचना !

आपके यहाँ आयोजित किसी भी कार्यक्रम जिसमें **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** पधारे हों, उस कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल से संबंधित फोटोग्राफ्स (कैप्सन के साथ) एवं वीडियो, समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की कटिंग यदि आपके पास हो तो कृपया उसकी एक कॉपी रिकॉर्ड में संग्रह हेतु निम्न पते पर भेजें। यदि आपके पास इनको कॉपी करने की सुविधा न हो तो मूल कॉपी रजिस्टर्ड डाक द्वारा भिजवायें। इसकी हम कॉपी कराकर मूलकॉपी आपको रजिस्टर्ड डाक से तत्काल भिजवा देंगे।

पता :- श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर जयपुर-302015 **E-mail - ptstjaipur@yahoo.com**

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - (बाईसवीं कड़ी, गतांक से आगे)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि ''जगत में क्षीण सी संभावनाओं के आधार पर भी आसन्न संकटों, खतरों और बिमारियों से बचने के लिये हम कितने उपक्रम करते हैं, तब आत्मा की नश्वरता साबित हुये बिना और अनादि–अनन्तता की प्रबल संभावना होते हुये भी हम क्यों उसके प्रति उदासीन रहते हैं ?''

अब आगे पढिये –

जितने अधिक सजग और सक्रिय हम अनिष्ट की आशंका निर्मूल करने के लिये रहते हैं उतने ही निरंतर अपने हित में बेहतर संभावनाओं की तलाश में भी रहते हैं।

सिर्फ वर्तमान को दृष्टि में रखकर तात्कालिक तौर पर सुख और संतुष्टि पाने के हमारे अब तक के सभी प्रयत्न निष्फल साबित हुये हैं और इनकी तलाश में हम नित नये प्रयोग करते हैं।

तब ***क्यों नहीं इसी प्रक्रिया के अन्तर्गत हम आत्मा की अनादि–अनन्तता को स्वीकार कर अपने अनंतकाल तक सुखी बने रहने का उपक्रम करें ?***

मात्र तात्कालिक सुख की खोज के हमारे ये प्रयत्न मात्र साधारण ही नहीं होते हैं वरन् अत्यंत महत्वाकांक्षी भी होते हैं। शक्तिसाध्य, श्रमसाध्य, व्ययसाध्य एवं खतरनाक भी। कभी–कभी तो शेखचिल्ली के ख्वाबों के समान भी; पर हम इनसे थकते नहीं, विरत नहीं होते। निरन्तर इन्हीं में मग्न रहते हैं। ***तब अनादि–अनंत आत्मा के अनन्तसुख के लिये क्या नहीं किया जा सकता है ?***

उदाहरण के लिये हम विचार करें –

हमारी इसी पृथ्वी पर प्रचुर भोगसामग्री उपलब्ध है और हमारी भोगने की क्षमता अत्यंत सीमित है, बावजूद इसके नित नवीन भोगों की खोज में हम अन्य ग्रहों की ओर तक ताकते रहते हैं, अरबों रुपयों का खर्चा करके और जीवन को जोखिम में डालकर भी।

अपने इन प्रयासों में निरन्तर असफल रहने के बावजूद हम थकते नहीं, निराश नहीं होते हैं। यह क्रम कोई आज का नहीं, अनादिकाल से चला आ रहा है।

क्यों नहीं हम निरंतर सुख की खोज के अपने इन प्रयत्नों की दिशा में परिवर्तन करते हैं, क्यों नहीं हम अपने निज भगवान आत्मा को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं ?

यदि हमें कोई प्राणघातक रोग हो जाये और जीवन बचने की कोई संभावना ही दिखाई न देती हो तब भी हम अपने प्रयास छोड़ते नहीं हैं। जहाँ भी आशा की एक क्षीण सी किरण भी दिखाई दे, हम उसी ओर दौड़ पड़ते हैं।

यदि कोई सड़क पर चलता साधारण, अनपढ व्यक्ति भी हमें कोई टोटका बतला दे तो हम उसे भी आजमाने से नहीं चूकते हैं, इतना ही नहीं पर कोई लाभ होता दिखाई न देता हो तब भी हम निरंतर प्रयोग करते ही रहते हैं, उसे छोड़ नहीं देते हैं।

कहने का तात्पर्य मात्र इतना है कि जीवित रहने की हमारी आकांक्षा इतनी प्रबल है कि कोई इतना कह भर दे कि मेरे पास अमर होने का उपाय है तो हम उसके पीछे चल देते हैं, यह जानने के बावजूद कि आज तक तो कोई अमर हुआ नहीं है। न तो कोई चक्रवर्ती सम्राट और न ही कोई महान तपस्वी संत ही।

हमारी उक्त प्रवृत्ति हमारी तीव्र जिजीविषा की प्रतीक है, जीवित रहने की हमारी अत्यंत तीव्र चाह को इंगित करती है।

हममें जीवन के प्रति तीव्र आकर्षण है और मौत का सबसे अधिक खौफ। ऐसे में यदि कोई हमें अमर होने की विधि बतलाये तो क्या करेंगे?

हमें क्या करना चाहिये ?

हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिये ?

हम अमर होने के लिये क्या कर सकते हैं ?

क्या कीमत चुका सकते हैं आप अमर होने के लिये ?

क्या मोलभाव करेंगे ?

यदि मैं उक्त प्रश्न आपसे पूछूँ तो आप क्या जवाब देंगे ?

यही न कि 'मरता क्या ना करता ?' क्या कर सकते हैं का प्रश्न ही क्या है ? यह पूछिये कि क्या नहीं कर सकते हैं, क्या नहीं करेंगे, क्या–क्या नहीं करेंगे ?

यदि ऐसा ही है तो कुछ करता क्यों नहीं ?

वीतराग–सर्वज्ञदेव कह तो रहे हैं कि 'तू (आत्मा) अनादि–अनंत है, न तो यह आत्मा कभी उत्पन्न ही हुआ है और न ही कभी मरेगा ही। यदि तू अपने स्वरूप को पहिचानकर उसमें ही स्थित हो जाये तो यह जन्म–मरण का क्रम भी टूट जायेगा और तू अविनाशी सिद्धपद को प्राप्त हो जायेगा।

क्या यह तेरे अमरत्व की घोषणा नहीं है ?

क्या उक्त तथ्य की स्वीकृति मात्र वस्तुस्वरूप की ओर से हमारे लिये अमरत्व और अनंतसुख का वरदान नहीं है ?

इतना सुनने के बाद भी क्यों नहीं तू आत्मकल्याण के मार्ग पर लगता है ? क्यों नहीं तुझे आत्मा का अस्तित्व स्वीकार होता है ? क्यों नहीं तुझे उसकी अनादि–अनंतता पर भरोसा होता है ? क्यों नहीं तू स्वयं अनुभव कर इस तथ्य को स्वीकार करता है ?

वीतराग–सर्वज्ञदेव की उक्त घोषणा में तो तुझे अमर बतलाया गया है, अमर होने का मार्ग बतलाया गया है। यह किसी अज्ञानी, अल्पज्ञ की कही गई अपुष्ट बात भी नहीं है। अनादिकाल से आज तक अनन्त जीव इसी मार्ग पर चलकर अमरता को प्राप्त हुये हैं; पर तुझे यह बात रुचती क्यों नहीं है ? ***(क्रमशः)***

।। हार्दिक आमंत्रण ।।

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड, डबोक, उदयपुर- २४

श्री रत्नत्रय विधान

शुक्रवार, दि. २२ अप्रैल २०१६

श्री सीमंधर जिनालय वेदी शिलान्यास महोत्सव

शनिवार, दि. २३ अप्रैल २०१६

अतिथि निवास कन्या छात्रावास भवन उद्घाटन समारोह

रविवार, दि. २४ अप्रैल २०१६

जैन बालिका संस्कार संस्थान जैन दर्शन कन्या महाविद्यालय | उदयपुर

सम्पर्क सूत्र : 97235 50590, 97235 50592, 94141 03492

Email: info@shashwatdham.com • www.shashwatdham.com

दृष्टि का विषय

20 पाँचवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'णमोकार मंत्र' विषय को लेकर २००-३०० पेज की किताब लिखी जाती है, लेकिन उसमें यह नहीं लिखा जाता है कि अरिहंत किसे कहते हैं? सिद्ध किसे कहते हैं? अपितु उसमें यह लिखा रहता है कि 'णमोकार मंत्र' पढ़ने से कुंआ में पानी आ गया था, अंजन चोर को विद्या सिद्ध हो गई थी। अरे भाईसाहब! हमें णमोकार मंत्र की किताब से यह नहीं जानना है कि 'णमोकार मंत्र' से क्या हुआ था?

णमोकार मंत्र में अरहंतादि को नमस्कार किया गया है, तो उस किताब में भी अरंहतादिक के स्वरूप पर वर्णन किया जाना चाहिए। यदि २०० पेज की किताब लिखने के बजाय १०० पेज भी अरहंतादिक के स्वरूप पर लिखे जाते हैं तो वे उस किताब से ज्यादा श्रेष्ठ हैं।

ऐसा कहा जाता है कि सिद्धचक्र विधान करने से श्रीपाल का कोढ़ दूर हो गया था। मैं इस कथानक पर प्रश्नचिह्न खड़ा नहीं करना चाहता हूँ, करोड़ों वर्ष पुरानी बात है। हुआ था या नहीं हुआ था? यह कोई सिद्ध नहीं कर सकता है। आगम का आधार छोड़कर न तो कोई यह सिद्ध कर सकता है कि श्रीपाल का कोढ़ दूर हुआ और न यह सिद्ध कर सकता है कि नहीं हुआ था।

मैं हमेशा अपने विद्यार्थियों से कहता हूँ कि समाज में ऐसा कभी मत कहना कि 'श्रीपाल का कोढ़ दूर नहीं हुआ था' क्योंकि ऐसा कहने से तुम परेशानी में आ जाओगे।

यदि कोई यह कहे कि 'श्रीपाल का कोढ़ दूर हो गया था' तो मैं उनसे कहता हूँ कि ठीक है, तुम्हारी बात शत-प्रतिशत सही है; लेकिन सिद्धचक्र विधान का आयोजन तो अभी भी हो सकता है तथा इस दुनिया में कोढ़ी भी बहुत हैं, यदि टी.वी. पर किसी एक भी कोढ़ी का रोग दूर करके बता दें तो मैं सारी दुनिया में जैनधर्म फैला दूँगा।

ईसाईयों ने अपना धर्म इसीप्रकार ही तो फैलाया है। उन्होंने मिशन के अस्पताल खोल कर बीमारों का इलाज किया और मिशन के स्कूल खोलकर पढ़ाने का काम किया - इसप्रकार लाखों लोगों को ईसाई बना लिया। जिनको हम पढ़ने का अधिकार नहीं देते थे, मन्दिर में नहीं आने देते थे; उन्हें उन लोगों ने पढ़ाया। जिनको हम अस्पताल में नहीं घुसने देते थे अर्थात् जिनकी हम दवा नहीं करते थे, उन्होंने उनकी दवा की। इसप्रकार उन्होंने सारी दुनिया पर अपना प्रभाव फैला दिया।

भारत में जितने भी ईसाई हैं, वे यहीं के हैं, हमारे भाई-बहिन ही हैं; विदेश से नहीं आये हैं। वे इन्हीं मिशन के विद्यालयों और अस्पतालों के कारण परिवर्तित हुए हैं।

यदि उक्त प्रयोग द्वारा टी.वी. पर कोढ़ ठीक होने का इलाज एक बार दिखा दिया जाये तो सारे विश्व में जैनधर्म फैल जायेगा। फिर **यदि कोढ़ ठीक होता है तो जुकाम, कैन्सर, हार्ट आदि का इलाज क्यों नहीं होगा ?**

अरे भाई ! णमोकार मंत्र की किताब में अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु - इनके स्वरूप का वर्णन होना चाहिए। उसमें इस बात का वर्णन होना चाहिए कि जैनियों के भगवान कर्त्ता-धर्त्ता नहीं हैं। जबकि उस किताब में भगवान के नाम पर लिख देते हैं कि भगवान ने यह किया, भगवान ने वह किया। सीता के अग्नि कुण्ड में कमल बना दिया, द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया।

अब यदि उनसे पूछो कि किस भगवान ने यह सब किया? तो वे तत्काल कह देंगे कि भगवान महावीर ने। अरे भाई! जब सीता थी, तब महावीर भगवान पैदा ही नहीं हुए थे। जब द्रोपदी का चीरहरण हुआ था, तब महावीर भगवान थे ही नहीं।

मैंने सम्मेदशिखर पर एक ३२ पेज की किताब लिखी है, बहुत लोकप्रिय भी हुई; लेकिन मैंने जब सम्मेदशिखर पर एक अन्य २०० पेज की किताब देखी, तब मुझे बहुत आश्चर्य हुआ; क्योंकि उसमें सिर्फ यही लिखा था कि कोई व्यक्ति सम्मेदशिखर गया और उसका यह रोग दूर हो गया, एक महाराष्ट्र का सेठ गया, उसका वह हो गया और यहाँ तक लिख देते हैं कि वे पार्श्वनाथ भगवान की टोंक पर गए और उनका मोक्ष हो गया। हार्ट के मरीज होते हैं, वे ऊपर पहाड़ पर चढ़ते हैं और मर जाते हैं तो कहते हैं कि उनकी बहुत अच्छी मौत हुई है, क्या ये अच्छी मौत हुई है ?

अरे ! मैं यह कहता हूँ कि यदि हार्ट के मरीज थे तो उन्हें श्री पार्श्वनाथ के टोंक पर जाना ही नहीं था।

उस किताब में महिमा मंडित करते हुए यह भी लिखा है कि वे तो महान हैं, जिनकी वहाँ से मृत्यु हुई, निश्चितरूप से स्वर्ग गए होंगे। मैं कहता हूँ कि इन बातों में कोई दम नहीं है, जिसने कभी आत्मा का नाम नहीं सुना हो, जो आत्मा की बात नहीं जानते हों; उनके अन्तसमय में परिणाम कैसे सुधर सकते हैं ?

अरे ! वे तो घबराहट में, अपने बीबी-बच्चों की चिन्ता में मरे होंगे तो उन्हें स्वर्ग कैसे हुआ होगा? जैसे प्रथमानुयोग में वे सेठ, पानी के कारण मेढ़क हो गये थे, वैसे ही उनका भी हुआ होगा।

यदि वे हार्ट के मरीज थे तो वहाँ उन्हें पर्वत पर नहीं जाना चाहिए था, उन्होंने गलती की है, हिम्मत नहीं। जो वस्तुस्थिति है, उस वस्तुस्थिति को समझना चाहिए। यदि शरीर में ताकत नहीं थी तो नहीं जाना चाहिए था। हार्ट का मरीज यदि सम्मेदशिखर के पर्वत पर जाएगा तो उसके मरण की संभावना ही अधिक है और ऐसे समय में उसके परिणाम विशुद्ध नहीं रह सकते हैं और विशुद्ध परिणामों के अभाव में उसे स्वर्ग की प्राप्ति कैसे होगी ?

वास्तव में यदि सम्मेदशिखर के संबंध में कोई किताब लिखी जाती है तो उसमें सम्मेदशिखर की झूठी महिमा का वर्णन न होकर सम्मेदशिखर के यथार्थ स्वरूप का वर्णन होना चाहिए।

इसीप्रकार णमोकार मंत्र की किताबों में भी अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु - इनके स्वरूप का वर्णन किया जाना चाहिए।

जिसप्रकार णमोकार मंत्र बोलने के साथ-साथ समझने की चीज है; उसीप्रकार 'न द्रव्येण खण्डयामि, न क्षेत्रेण खण्डयामि, न कालेन खण्डयामि, न भावेन खण्डयामि, - यह मात्र बोलने की चीज नहीं है अपितु दृष्टि का विषय समझने के लिए यह समझना भी अत्यन्त आवश्यक है।

दृष्टि के विषय को समझे बिना न तो सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है और न सम्यग्ज्ञान की, आत्मा का ध्यान भी संभव नहीं है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का मूलाधार तो दृष्टि का विषयभूत भगवान आत्मा ही है। उसके आश्रय बिना सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उत्पत्ति नहीं हो सकती है तो आगे की बात ही क्या करें?

निश्चयरत्नत्रय की उत्पत्ति, वृद्धि और पूर्णता का एकमात्र आधार यह दृष्टि का विषयभूत भगवान आत्मा ही है। अतः इसे अवश्य जानें; इसमें ही सार है, शेष सब संसार है। **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

23 से 25 दिसम्बर	जबेरा (म.प्र.)	वार्षिकोत्सव
25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
30 व 31 जन.2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास
11 से 17 फरवरी	गुना (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
22 से 24 फरवरी	उदयपुर (राज.)	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2016

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 24 जनवरी 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 25 जनवरी 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 26 जनवरी 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- प्रबंधक, परीक्षा बोर्ड

डॉ. धनकुमारजी का वर्ल्ड रिकॉर्ड

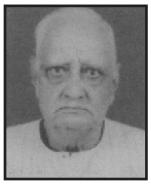

(1) सूरत (गुज.) निवासी डॉ. धनकुमारजी जैन का नाम सबसे अधिक उम्र (80 वर्ष 8 माह) में Ph.D. की उपाधि प्राप्त करने वाले दुनिया के सर्वप्रथम व्यक्ति के रूप में **'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड'** में दर्ज हुआ है।

आप विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं, आपने सर्वार्थसिद्धि वचनिका आदि लगभग 20 ग्रंथों का ढूंढारी से हिन्दी अनुवाद किया है। **'टोडरमलकृत अर्थसंदृष्टि अधिकार में निहित कर्म प्रकति मोह का गणितीय विश्लेषण'** विषय पर आठ वर्षों में अपना शोध पूर्ण किया, जिसमें आपने गोम्मटसार की लुप्तप्राय अलौकिक गणित को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

आपने अपनी पीएच.डी. द ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फॉर कॉम्प्लिमेन्टरी मेडिसिन, यू.एस.एस.आर. की कोलम्बो (श्रीलंका) स्थित अतिरिक्त शाखा सम्बद्ध जोराष्ट्रियन कॉलेज मुम्बई के माध्यम से इन्दौर मूल के प्रोफेसर डॉ. मन्मथ पाटनी के निर्देशन में पूर्ण की। आप टोडरमल स्मारक के अनन्य सहयोगी हैं। इस उपलक्ष्य में आपकी ओर से 2200/- रुपये की राशि संस्था को प्राप्त हुई।

जिनवाणी रत्न उपाधि भी

● ज्ञातव्य है कि आपको गोम्मटसार की लुप्तप्राय अलौकिक गणित पर शोधलेख लिखकर पीएच.डी. की डिग्री लेने के उपलक्ष्य में श्री खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज, सूरत द्वारा दिनांक 29 नवम्बर को **'जिनवाणी रत्न'** की उपाधि से विभूषित किया गया।

आपको जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

अष्टाह्निका महापर्व संपन्न

सेलू (महा.) : यहाँ कार्तिक माह की अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 18 से 25 नवम्बर तक नंदीश्वर द्वीप विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित मनोजजी जबलपुर द्वारा प्रात: पुरुषार्थसिद्ध्युपाय पर, दोपहर में समयसार पर एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित मनोजजी जैन द्वारा संपन्न हुये।

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) निवासी श्री नथमलजी झांझरी की सुपौत्री एवंश्री सर्वेश कुमार जैन की सुपुत्री **सौ.कां. श्रीया जैन** का शुभ विवाह दिनांक 16 नवम्बर 2015 को **चि.निश्चल जैन** सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमार बाकलीवाल उदयपुर के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये। हार्दिक बधाई !

छत्तीसगढ में महती धर्मप्रभावना

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ शंकर नगर स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 3 से 10 नवम्बर तक पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर द्वारा 'जैसी मति वैसी गति' विषय पर दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

इसके पश्चात् श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर में दिनांक 25 से 30 नवम्बर तक ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 'चार अभाव' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके साथ ही ब्र. रवि भैया ललितपुर द्वारा सी.डी. के माध्यम से बच्चों की कक्षा ली गई। कार्यक्रम में लगभग 200 दिगम्बर साधर्मियों के साथ-साथ अनेक श्वेताम्बर भाईयों ने भी लाभ लिया।

पाठशाला सम्मेलन संपन्न

दहिगांव (महा.) : यहाँ मध्यवर्ती वीतराग स्वाध्याय मंडल द्वारा दिनांक 15 नवम्बर को पाठशाला सम्मेलन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पंढरपुर, अकलूज, मालशिरस, नातेपुते, फलटन, लासुर्णे, म्हसवड, पुणे, मोडलिब आदि स्थानों के बच्चे सम्मिलित हुये, जिसमें पूजन, सामूहिक कक्षा एवं प्रतियोगितायें हुईं। सभी कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण एस.एस. पाटील द्वारा किया गया।

सभी कार्यक्रमों का संचालन पण्डित राहुलजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी शास्त्री, पण्डित प्रियमजी शास्त्री द्वारा एवं संयोजन श्री उमेशजी गांधी द्वारा किया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127